२. झुमका

– सुशील सरित

संभाषणीय

'शिक्षित स्त्री, प्रगत परिवार' इस विधान को स्पष्ट कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- विद्यार्थियों से परिवार के महिलाओं की शिक्षा संबंधी जानकारी प्राप्त करें ।
- स्त्री शिक्षा के लाभ पूछें । • स्त्री शिक्षा की आवश्यकता पर विद्यार्थियों से अपने विचार कहलवाएँ ।

कांति ने घर का कोना–कोना ढूँढ़ मारा, एक–एक आलमारी के नीचे बिछे कागज तक उलटकर देख लिए, बिस्तर हटाकर दो– दो बार झाड़ डाला लेकिन झुमका न मिलना था, न मिला । यह तो गनीमत थी कि सर्वेश को झुमके के बारे में पता ही नहीं था वरना सोचकर ही कांति सिर से पाँव तक सिहर उठी । अभी पिछले महीने ही तो मिन्नी की घड़ी खोने पर सर्वेश ने किस तरह पूरा घर सर पर उठा लिया था । कांति ने हाथ में पकड़े दूसरे झुमके पर नजर डाली । कल अपनी पूरे दो साल की जमा की हुई रकम के बदले में झुमके खरीदते समय कांति ने एक बार भी नहीं सोचा था कि उसकी पूरे दो साल तक इकट्ठा की हुई रकम से झुमके खरीदकर जब वो सर्वेश को दिखाएगी तो वे क्या कहेंगे ।

दरअसल झुमके का वह जोड़ा था ही इतना खूबसूरत कि एक नजर में ही उसे भा गया था । दो दिन पहले ही तो रमा को एक सोने की अँगूठी खरीदनी थी । वहीं शोकेस में लगे झुमकों को देखकर कांति ने उसे निकलवा लिया । दाम पूछे तो कांति को विश्वास ही नहीं हुआ कि इतना खूबसूरत और चार तोले का लगने वाला वह झुमका सेट केवल दो हजार का हो सकता है । दुकानदार रमा का परिचित था, इसी वजह से उसने कांति के आग्रह पर न केवल उस झुमका सेट को शोकेस से अलग निकालकर रख दिया वरना यह भी वादा कर दिया कि वह दो दिन तक इस सेट को बेचेगा भी नहीं । पहले तो कांति ने सोचा कि सर्वेश से खरीदवाने का आग्रह करे लेकिन मार्च का महीना और इनकम टैक्स के टेंशन से घिरे सर्वेश से कुछ कहने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ी । अपनी सारी जमा–पूँजी इकट्ठा कर वह दूसरे ही दिन जाकर वह सेट खरीद लाई । अगले हफ्ते अपनी 'मैरिज एनिवर्सरी की पार्टी' में पहनेगी तभी सर्वेश को बताएगी । यह सोचकर उसने सर्वेश क्या, घर में किसी को भी कुछ नहीं बताया ।

आज सुबह रमा के आने पर जब कांति ने उसे झुमके दिखाए तो ''अरे, इसमें बगलवाला मोती तो टूटा हुआ है '' कहकर रमा ने झुमके के एक टूटे मोती की तरफ इशारा किया तो उसने भी ध्यान दिया । अभी चलकर ठीक करा लें तो बिना किसी अतिरिक्त राशि लिए ठीक हो जाएगा वरना बाद में वह सुनार माने या न माने, ऐसा सोचकर वह तुरंत ही रमा के साथ रिक्शा

परिचय

सुशील सरित जी आधुनिक कथाकार हैं । आपकी कहानियाँ, निबंध विविध पत्र–पत्रिकाओं में प्रायः छपते रहते हैं ।

गद्य संबंधी

वर्णनात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना का रोचक, प्रवाही वर्णन ही वर्णनात्मक कहानी कहलाती है ।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने प्रच्छन्न रूप में परोपकार, दया एवं अन्य मानवीय गुणों को दर्शाते हुए इन्हें अपनाने का संदेश दिया है ।

करके सुनार के यहाँ चली गई और सुनार ने भी, ''अरे बहन जी, यह तो मामूली-सी बात है, अभी ठीक हुई जाती है ''कहकर आधे घंटे में ही झुमका न केवल ठीक करके दे दिया। 'आगे भी कोई छोटी-मोटी खराबी हो तो निःसंकोच अपनी ही दुकान समझकर आ जाइएगा' कहकर उसे तसल्ली दी। घर आकर कांति ने झुमके का पैकेट मेज पर रख दिया और घर के काम-काज में लग गई। अब काम-काज निबटाकर जब कांति ने पैकेट को आलमारी में रखने के लिए उठाया तो उसमें एक ही झुमका नजर आ रहा था। दूसरा झुमका कहाँ गया, यह कांति समझ ही नहीं पा रही थी। सुनार के यहाँ से तो दोनों झुमके लाई थी, इतना कांति को याद था।

खाना खाकर दोपहर की नींद लेने के लिए कांति जब बिस्तर पर लेटी तो बहुत देर तक उसकी बंद आँखों के सामने झुमका ही घूमता रहा। बड़ी मुश्किल से आँख लगी तो आधे घंटे बाद ही तेज-तेज बजती दरवाजे की घंटी ने उसे उठने पर मजबूर कर दिया।

'कमलाबाई ही होगी' सोचते हुए उसने ड्राइंग रूम का दरवाजा खोल दिया। ''बहू जी, आज जरा देर हो गई, लड़की दो महीने से यहीं है, उसके लड़के की तबीयत जरा खराब हो गई थी सो डॉक्टर को दिखाकर आ रही हूँ।'' कमलाबाई ने एक साँस में ही अपनी सफाई दे डाली और बरतन माँजने बैठ गई।

कमलाबाई की लड़की दो महीने से मायके में है, यह खबर कांति के लिए नई थी। ''क्यों ? उसका घरवाला तो कहीं ट्रांसपोर्ट कंपनी में नौकरी करता है न ?'' कांति से पूछे बिना रहा नहीं गया।

''हाँ बहू जी, जबसे उसकी नौकरी पक्की हुई है तबसे उन लोगों की आँखें फट गई हैं। कहते हैं, तेरी माँ ने दो-चार गहने भी नहीं दिए। अब तुम्हीं बताओ बहू जी, चौका-बासन करके मैं आखिर कितना करूँ। बिटिया के बापू होते तो और बात थी। बस इसी बात पर बिटिया को लेने नहीं आए।'' कमलाबाई ने बरतनों को झबिया में रखकर भर आई आँखों की कोरों को हाथों से पोंछ डाला।

❊ सहानुभूति के दो-चार शब्द कहकर और 'अपनी इस महीने की पगार लेती जाना' कहकर कांति ऊपर छत से सूखे हुए कपड़े उठाने चली गई। कपड़े समेटकर जब कांति नीचे आई तो कमलाबाई बरतन किचन में रखकर जाने को तैयार खड़ी थी। ''लो, ये दो सौ रुपये तो ले जाओ और जरूरत पड़े तो माँग लेना,'' कहकर कांति ने पर्स से सौ-सौ के दो नोट निकालकर कमलाबाई के हाथ पर रख दिए। नोट अपने पल्लू में बाँधकर कमलाबाई दरवाजे तक पहुँची ही थी कि न जाने क्या सोचती हुई वह फिर वापस लौट आई। ''क्या बात है कमलाबाई?''उसे वापस लौटकर आते देख कांति चौंकी। ❊

''बहू जी, आज दोपहर में मैं जब बाजार से रस्तोगी साहब के घर काम करने जा रही थी तो रास्ते में यह सड़क पर पड़ा मिला। कम-से-कम दो

मौलिक सृजन

'हम समाज के लिए समाज हमारे लिए' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

आसपास

निम्न सामाजिक समस्याओं को लेकर आप क्या कर सकते हैं बताइए :-

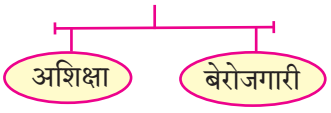

❊ परिच्छेद पर आधारित कृतियाँ

(१) एक से दो शब्दों में उत्तर लिखिए :-

(क) कमलाबाई की पगार

(ख) कमलाबाई ने नोट यहाँ रखे

(२) 'सौ' शब्द का प्रयोग करके कोई दो कहावतें लिखिए।

(३) 'अपने घरों में काम करने वाले नौकरों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना चाहिए', अपने विचार लिखिए।

तोले का तो होगा, बहू जी ! मैं कहीं बेचने जाऊँगी तो कोई समझेगा कि चोरी का है । आप इसे बेच दें, जो पैसा मिलेगा, उससे कोई हलका-फुलका गहना बिटिया को दिलवा दूँगी और ससुराल खबर करवा दूँगी'' कहते हुए कमलाबाई ने एक झुमका अपने पल्लू से खोलकर कांति के हाथ पर रख दिया ।

''अरे !'' कांति के मुँह से अपने खोए हुए झुमके को देखकर एक शब्द ही निकल सका । ''विश्वास मानो बहू जी, यह मुझे सड़क पर ही पड़ा हुआ मिला ।'' कमलाबाई उसके मुँह से 'अरे' शब्द सुनकर सहम-सी गई।

''वह बात नहीं है, कमलाबाई,'' दरअसल आगे कुछ कहती, इससे पहले कि कांति की आँखों के सामने कमलाबाई की लड़की की सूरत घूम गई । लड़की को उसने कभी देखा नहीं था लेकिन कमलाबाई ने उसके बारे में इतना कुछ बता दिया था कि कांति को लगता था कि उसने उसे बहुत करीब से देखा है । दुबली-पतली, गंदुमी रंग की कमजोर-सी लड़की, जिसे दो महीने से उसके पति ने केवल इस कारण मायके में छोड़ा हुआ है कि कमलाबाई ने उसे दो-चार गहने भी नहीं दिए थे ।

कांति को एक पल को यही लगा कि सामने कमलाबाई नहीं, उसकी वही दुर्बल लड़की खड़ी है, जिसके एक हाथ में उसके झुमके के सेट का खोया हुआ झुमका चमक रहा है ।

''क्या सोचने लगीं बहू जी?'' कमलाबाई के टोकने पर कांति को जैसे होश आ गया । ''कुछ नहीं'' कहकर वह उठी और आलमारी खोलकर दूसरा झुमका निकाला । फिर पता नहीं क्या सोचकर उसने वह झुमका वहीं रख दिया । आलमारी उसी तरह बंद कर वापस मुड़ी, ''कमलाबाई, तुम्हारा यह झुमका मैं बिकवा दूँगी । फिलहाल तो ये हजार रुपये ले जाओ और कोई छोटा-मोटा सेट खरीदकर अपनी बिटिया को दे देना । अगर बेचने पर कुछ ज्यादा पैसे मिले तो मैं बाद में तुम्हें दे दूँगी ।'' यह कहकर कांति ने दूधवाले को देने के लिए रखे पैसों में से सौ-सौ के दस नोट निकालकर कमलाबाई के हाथ में पकड़ा दिए ।

''अभी जाकर रघू सुनार से बाली का सेट ले आती हूँ, बहू जी ! भगवान तुम्हारा सुहाग सलामत रखे,'' कहती हुई कमलाबाई चली गई ।

श्रवणीय

आकाशवाणी पर किसी सुप्रसिद्ध महिला का साक्षात्कार सुनिए ।

लेखनीय

'दहेज' समाज के लिए एक कलंक है, इसपर अपने विचार लिखिए ।

शब्द संसार

गनीमत (स्त्री.अ.) = संतोष की बात
तसल्ली (स्त्री.अ.) = धीरज
झबिया (स्त्री.) = टोकरी
गंदुमी (वि.फा.) = गेहुँआ रंग
चौका-बासन (पुं.सं.) = रसोई घर, बरतन साफ करना

मुहावरे

सिहर उठना = भय से काँपना
घर सर पर उठा लेना = शोर मचाना
आँख फटना = चकित हो जाना

पाठ के आँगन में

लेखिका सुधा मूर्ति द्वारा लिखित कोई एक कहानी पढ़िए ।

पठनीय

(१) एक-दो शब्दों में ही उत्तर लिखिए :-

(क) दुबली-पतली –

(ख) दो महीने से मायके में है –

(ग) कमजोर-सी –

(घ) दो महीने से यहीं है –

(२) कारण लिखिए :-

(च) कांति को सर्वेश से झुमका खरीदवाने की हिम्मत नहीं हुई .....

(छ) कांति ने कमलाबाई को एक हजार रुपये दिए .....

(३) संजाल पूर्ण कीजिए :-

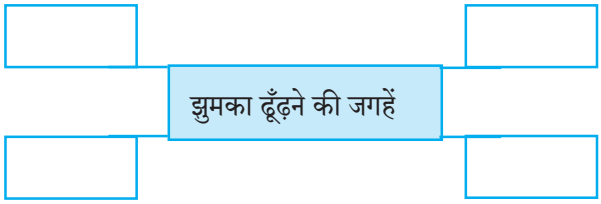

(४) आकृति पूर्ण कीजिए :-

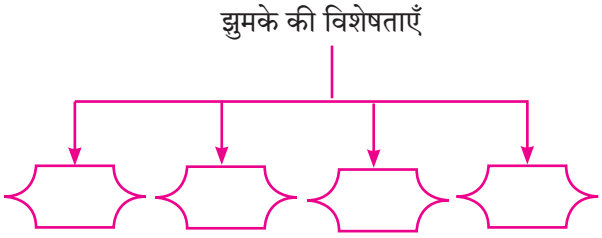

पाठ से आगे

आभूषणों की सूची तैयार कीजिए और शरीर के किन अंगों पर पहने जाते हैं, बताइए ।

भाषा बिंदु

रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखकर नए वाक्य बनाइए :

विलोम

विलोम शब्द

१. कांति को कमला पर विश्वास था । .....×..... .....

२. बड़ी मुश्किल से उसकी आँख लगी । .....×..... .....

३. दुकानदार रमा का परिचित था । .....×..... .....

४. सोच समझकर व्यय करना चाहिए । .....×..... .....

५. हमें सदैव अपने लिए किए गए कामों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए । .....×..... .....

६. पूर्व दिशा में सूर्योदय होता है । .....×..... .....

.....×..... .....

रचना बोध

.....

.....

.....